मूल्य 1 रु.

वर्षः 10 - अंक : 244, मुंबई, मंगलवार, 8 दिसंबर, 2020 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक

# मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त (R)

अब हर सच होगा उजागर

# आज भारत बंद किसानों का वादा

## लोग दफ्तर जा सकें, इसलिए चक्काजाम
## सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक

**नई दिल्ली।** केंद्र सरकार की ओर से लाए गए तीन कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का प्रदर्शन लगातार जारी है। सरकार और किसानों के बीच इसे लेकर वार्ताएं भी हुई, लेकिन इसका कोई पुष्ट परिणाम अभी तक नहीं निकल पाया है। इसीलिए अपनी मांगों को लेकर किसानों ने आठ दिसंबर यानी मंगलवार को भारत बंद का एलान किया है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

### इन सेवाओं पर रहेगी रोक

तीन राज्यों हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में सभी मंडियां बंद रहेंगी। सुबह आठ बजे से लेकर शाम तीन बजे तक चक्का जाम रहेगा। यातायात सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं। बस और रेल से यात्रा करने वाले यात्रियों को परेशानी हो सकती है। आवश्यक चीजों जैसे दूध, फल और सब्जी पर रोक रहेगी।

### इन सेवाओं को मिलेगी बंद से छूट

एंबुलेंस और आपातकालीन सेवाएं जारी रहेंगी, मेडिकल स्टोर खोले जा सकते हैं, अस्पताल सामान्य दिनों की तरह खुले रहेंगे, शादियों पर कोई पाबंदी नहीं।

### भारत बंद के दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरी तैयारी : मुंबई पुलिस

मुंबई पुलिस के अधिकारियों ने कहा है कि केंद्र के नए कृषि कानूनों के खिलाफ विभिन्न संगठनों और राजनीतिक दलों द्वारा मंगलवार को बुलाए गए भारत बंद के दौरान दुकानों और अन्य प्रतिष्ठानों को बंद कराने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। मुंबई पुलिस के प्रवक्ता एवं उपायुक्त (डीसीपी) एस चैतन्य ने बताया कि बंद के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इनमें महानगर में राज्य रिजर्व पुलिस बल (एसआरपीएफ) की तीन कंपनियों की तैनाती शामिल है। बंद के दौरान मंगलवार को गश्त बढ़ाई जाएगी।

## मुंबई में ऑपरेशन ऑल आउट: सिर्फ 3 घंटे में 362 अपराधियों के घर जाकर हुई पूछताछ, 22 तड़ीपार आरोपियों को किया गया गिरफ्तार

(समाचार पृष्ठ 3 पर)

# ऑरकेस्ट्रा बार में छापा

## 42 लोग गिरफ्तार, इनमें से 30 ग्राहक हैं

**संवाददाता**

**मुंबई।** मुंबई के उपनगर कांदीवली के अकुरली इलाके में एक ऑरकेस्ट्रा बार में छापा मार कर पुलिस ने 42 लोगों को गिरफ्तार कर लिया, इनमें से 30 ग्राहक हैं। पुलिस अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (उत्तर) के विशेष दस्ते ने रविवार की देर रात यह छापेमारी की। उन्होंने बताया, ग्राहकों के अलावा कैशियर, प्रबंधक, नौ वेटरों एवं दो गायकों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। उनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता एवं महामारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

## हमारी बात

# बढ़ता आंदोलन

**देश** जब एक आंदोलन की वजह से तनाव की ओर बढ़ता दिख रहा है, तब न केवल चिंता, बल्कि विचार-विमर्श की जरूरत भी बहुत बढ़ गई है। विरोध के लिए विरोध के बजाय सकारात्मक विमर्श की जरूरत है, ताकि समाधान की राह जल्दी निकल सके। पांचवें दौर की विफल वार्ता से यह तय हो गया था कि सरकार अभी किसानों को समझा नहीं पा रही है और किसान भी अब पहले की तुलना में अपनी मांगों को लेकर ज्यादा दृढ़ दिखने लगे हैं। सरकार ने बार-बार कहा है, एमएसपी की व्यवस्था यथावत जारी रहेगी, लेकिन किसान इससे आश्वस्त नहीं हैं। वे नए कानूनों में एमएसपी का प्रावधान चाहते हैं, ताकि निजी कंपनियां भी एमएसपी से नीचे कोई खरीदी न करें। कृषि के हर कानून में एमएसपी को अनिवार्य करने से जो व्यावहारिक समस्या आएगी, सरकार उसे किसानों को समझा नहीं पा रही है। बहुत सारी फसलें हैं, जिनके लिए एमएसपी नहीं है, लेकिन तब भी किसान उन फसलों को उगाते ही हैं, क्योंकि उन्हें लाभ होता है। देश में कुछ ऐसे क्षेत्र या राज्य भी हैं, जहां एमएसपी की व्यवस्था काम नहीं करती, लेकिन तब भी वहां किसान खेती करते ही हैं। समग्रता में किसानों के हित में सोचने की जरूरत है और यह भी सोच लेना चाहिए कि क्या हमने अपनी निजी कंपनियों का लाभ नहीं लिया है? लेकिन जब कोई आंदोलन 'हां या ना' के चरण में चला गया हो, तब सरकार पर ही ज्यादा जिम्मेदारी है कि आंदोलन को कैसे शांत किया जाए। क्या तीन कृषि कानूनों को कुछ समय के लिए टाला या कुछ समय के लिए वापस लिया जा सकता है? क्या इन तीनों कानूनों को लागू करने के लिए जमीनी आधार तैयार किया जा सकता है? सरकार को किसानों को सहमत करने के लिए कितना समय चाहिए? क्या इन कानूनों को तत्काल लागू करना जरूरी हो गया है? इन सवालों के जवाब हमें और सरकार को खोजने चाहिए। बहरहाल, पांचवें दौर की वार्ता नाकाम होने के बाद अब सबकी निगाह 8 दिसंबर को आयोजित भारत बंद और फिर 9 दिसंबर को प्रस्तावित किसान-सरकार वार्ता पर केंद्रित हो गई है। प्रमुख विपक्षी कांग्रेस के अलावा एक-एक कर सभी सियासी दल किसानों की मांग के समर्थन में खडे. होने लगे हैं और 8 दिसंबर को प्रस्तावित भारत बंद को समर्थन देने वालों की तादाद बढ़ती चली जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सीमाओं और यहां रहने वालों के बारे में भी जरूर सोच लेना चाहिए। यह अचरच की बात नहीं, यह किसानों का देश है और कोई भी किसानों के खिलाफ दिखना नहीं चाहेगा। जो लोग तीन कृषि कानूनों के विरोध में नहीं थे, वे भी किसानों के साथ खडे.होने लगे हैं, तो भारत की हकीकत समझना कतई कठिन नहीं है। क्या किसान-सरकार वार्ता भारत बंद से पहले संभव नहीं थी? भारत बंद से क्या अर्थव्यवस्था को लाभ होगा? ऐसे आंदोलन के जल्द से जल्द समापन का यत्न आज समय और देश की मांग है। काश, हमारे देश में कृषि पर पर्याप्त विचार-विमर्श के बाद फैसले लिए जाते, तो यह नौबत नहीं आती, लेकिन हमें समझना चाहिए कि विचार-विमर्श की जरूरत कभी खत्म नहीं होती। इसी से राह भी निकलेगी। कोई इस आंदोलन के पक्ष में हो या विपक्ष में, पर दुनिया देख रही है कि सत्य, अहिंसा आधारित लोकतांत्रिक भारत अपने फैसले कैसे लेता है।

# विज्ञापन/टीआरपी की दौड़ में पत्रकारों के हालात

**संवाददाता/सैय्यद अल्ताफ हुसैन**

**आजादी** के बाद से अब तक बहुत कुछ बदला पर गरीब आज भी सड़क पर भीख मांग रहा और जब तक देश में एक भी जान भूख और लानत से जाती हो उस देश को विकसित नहीं कहा जा सकता। यह मेरा मौलिक विचार है। जब तक जाति पात दीन धर्म की लड़ाई होती रहेगी तब तक हमें बुद्धिमान नहीं माना जा सकता और जब तक पत्रकार सच को सच न लिखे व दिखाये उसे पत्रकार नहीं माना जा सकता। चूंकि मैं इण्डियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन का महासचिव हूँ तो मेरी चिंता जायज है कि मैं कैसे मेरे पत्रकार भाई बहनों को संगठन का मेहनत का सत्यता कर्मठता ईमानदारी व समाज और सरकारी सिस्टम से भयहीन होने का इरादा मजबूत करा सकूं। आज कुछ संपादक हमारे पत्रकारों को विज्ञापन के लिए बहुत परेशान करते हैं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में मर्डर स्टोरी पर, हिंदू मुस्लिम झगड़े की ज्वलंत स्टोरी को मुद्दा बनाकर पत्रकारों की छवि खराब करने का धंधा आम हो गया है। मैं यह नहीं कहता कि विज्ञापन और टीआरपी गलत चीज है पर किसी पत्रकार पर जब आफत आती है तब उसकी मदद को कोई नहीं आता। मेरा लेख लिखने का मकसद यही है कि बुरे हालातों में पत्रकारों की हर सम्भव मदद हो सके, हम सब मिलकर रहें एक दूसरे का सहारा बने और सरकार व न्यायालय को हस्तक्षेप करना चाहिए। जो पत्रकार आपकी विदेश यात्रा, फीता काटना दिखाता है लिखता है उसके लिये भी सरकार के कुछ कर्तव्य होने चाहिए। हाल ही में पत्रकारों को स्वास्थ्य सेवाओं का भरोसा सरकारी सिस्टम ने दिलाया है पर यह कितना कामयाब होगा हम सब देखेगें कि यह चुनावी कसीदा है या जमीनी स्तर पर सबके लिए फायदेमंद साबित होगा। विदित हो कि हमारा भारत एक सार्वभौम संवैधानिक लोकतंत्र है और भारतीय लोकतंत्र के तीन संवैधानिक स्तम्भ है यथा विधायिका, कार्यपालिका एवं न्याय पालिका जिनके संगठन, कार्य, कार्य पद्धति संविधान में निहित है। विधायिका सर्व विदित है जन निर्वाचित सुनियोजित व्यक्ति समूह है जो जन सेवा भावना से प्रोत है तथा लोकतान्त्रिक पद्धती में जनप्रतिनिधित शासक होती है दूसरी कार्य पालिका जो शासनाधीन ,शासन द्वारा योग्यतानुसार नियुक्त तथा शासन के प्रति उत्तरदायी होती है। इसका कार्य विधयिका की नीति, योजनाओं का क्रियान्वन करना तथा नए पुराने नियम कानूनों का पालन तथा नियमनुसार द्वारा प्रशासन चलाना। इसके भी दो प्रमुख भाग होते हैं प्रशासन एवं विधि व्यवस्था यानि पुलिसिंग। तीसरा किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ है न्यायपालिका जो संवैधानिक रूप से इन दोनों स्तंभों से ऊपर होती है और इसका कार्य लगभग मोनिटर जैसा होता है अर्थात विधायिका द्वारा बनाये गए कानूनों की व्याख्या करना, उनके यथावत पालन पर नजर रखना, उनपर व्यवस्था देना, सर्वोपरि है दण्ड प्रावधानों को सुनिश्चित करना तथा दंडात्मक कार्यवाही करना, दोष तथा दण्ड निर्धारण करना। एक है चौथा स्वयम्भू स्तंभ जिसका संविधान में कोई उल्लेख नहीं है पर आज के समाज में यह स्वयं को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ निरुपित करता है, यह है 'पत्रकारिता'। पत्रकारिता का प्रादुर्भाव तो अनादी काल से है तथा हर काल, हर क्रांति में यह प्रतिभागी भी रहा है। विश्व स्तरीय चर्चा के लिए यह उपयुक्त स्थान नहीं है परन्तु देश की पराधीनता काल में भी पत्रकारिता का विशेष योगदान रहा है। स्वतंत्रता संग्राम में अमृतबाजार पत्रिका(सिसिर कु मार झमोतीलाल), संवाद कौमुदी (राजा राममोहन राय), रास्त गोफ्तार (दादा भाई नोरोजी), सोम प्रकाश (इश्वर चंद्र विद्या सागर), केसरी (बालगंगाधर तिलक), प्रबुद्ध भारत एवं उद्बोध (स्वामी विवेकानंद) इंडियन ओपीनियन (महात्मा गाँधी) वंदे मातरम (अरोबिन्दो घोष) आदि उस समय के मुखर पत्र पत्रिका थे जिनके स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को ना कोई नकार सकता है न कोई भूल सकता है। स्वतंत्रता के बाद जैसे कई स्वतंत्रता सेनानियों ने सत्ता की राजनीती से मुँह मोड़ लिया वैसे ही पत्रकारिता में भी स्वतंत्रता ध्वज धारियों ने सन्यास लेलिया, जो बचे थे उनमें भी एक अघोषित आचार संहिता का आधार था, सत्य को सत्य कहने का साहस था अतः वे राजनीती एवं प्रशासन के अच्छे दिग्दर्शक रहे। कहना पता नहीं उचित है या नहीं पर मुँह कैसे मोड़ा जा सकता है, जहां राजनेताओं के देश हित से आत्महित का प्रदूषण हुआ एवं सब बदल गया, उसी प्रकार पत्रकारिता में भी चाटुकारिता का पुट आया और फिर स्वार्थ सिद्धि, पीत पत्रकारिता आदि का दौर शुरू हो गया। सत्तर का दशक आते आते तक तो पत्रकारिता सरकार शरणागत जैसी हो गयी। धीरे धीरे सड़कों से महलों तक बेधड़क समाचारग्राही खुद पेडल मशीन से अखबार छाप कर स्वयं सड़कों पर अखबार बेंचने वाले पत्रकार इतिहास हो गए। उनके स्थान पर आ गए भवनों अट्टालिकाओं से चलने वाले पूंजीवादी, राजनेता या समर्थक समाचार पत्र, समाचार पत्र समूह और अंततः समाचार क्रांति- राजनीतिक भ्रान्ति, पैसा, पूंजी,पेपर कोटा और विज्ञापनों के बोझ तले दब गयी या कहें तो बिक गई। इस तथा कथित स्वयंभू चतुर्थ स्तंभ पर अभी तक नमी अवश्य बैठ गई थी पर जंग नहीं लगी थी। रेडियो को यहाँ घसीटना उपयुक्त ना होगा इस लिए कि यह लगभग पूरी तरह शासनाधीन ही रहा अतः इसे आकाशवाणी या घोषणा वाणी कह कर छोड़ा जा सकता है। परन्तु १९५९ में इसके ही अंतर्गत दृश्य श्रव्य माध्यम ( इलेक्ट्रोनिक मीडिया ) का प्रादुर्भाव हुआ जिसने १९७६ तक स्वयं को आकाश वाणी से स्वतंत्र कर लिया नाम मिला 'दूरदर्शन'। प्रारंभ में तो यह शासनाधीन सूचना तंत्र रहा फिर मनोरंजन भी जुड गया। पत्रकारिता का आयाम भी शासनाधीन जुड गया तथा इसका प्रयोग एवं प्रसारण दूरदर्शन केन्द्रों द्वारा होता रहा। यह एक प्रकार का सरकारी भोंपू तो अवश्य था पर एक अचार संहिता थी , समाचारों एवं मनोरंजन कार्यक्रमों की एक शुचिता थी शालीनता थी। संयोगवश कहा जा सकता है कोरोना त्रासदी में दूरदर्शन के वे कार्यक्रम पुनरावृत्ति में आज भी नयी पीढ़ी में रुचिपूर्वक देखे जा रहे है। १९९४ में इस इलेक्ट्रोनिक मीडिया का जी टी वी की स्थापना के साथ व्यवसायीकरण हुआ, फिर स्टार टी वी और उसके बाद ....। इलेक्ट्रोनिक मीडिया में बढ़ती पत्रकारिता की होड़ ने तो शायद पत्रकारिता का चीर हरण ही कर डाला , पराकाष्ठा तब आयी जब ये चेनल बिकाऊ हो गए प्रिंट मीडिया की जैसी पीत पत्रकारिता ने यहाँ भी घर कर लिया। हरेक को दूकान चाहिए बस एक एक पत्रकार एक एक चेनल ले कर बैठ गया और खुले आम यह तथा कथित चौथा स्तंभ सार्वभौम, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान बन बैठा, हर चेनल के अपने लिंक होते, क्या पता आपको ,कब किसकी हवा निकाल दी जाये। इस स्तंभ की सर्वज्ञ सर्वभौमता के प्रमाण, आप घर में बैठे महसूस कीजिये, संसद में सत्र चल रहा है संसद के बाहर एक व्यक्ति अपने संजय चक्षु से सैकड़ों मील दूर स्टूडियो में बैठे धृतराष्ट्र उद्घोषक को बताता है ,संसद में क्या हो रहा है, रक्षा मंत्री , वित्तमंत्री या प्रधान मंत्री क्या बोल रहे हैं। स्टूडियो में बैठा उद्घोषक यकायक आपको अपनी सर्वज्ञता का आभास देता है जब वह देश की रक्षा नीतियों, रक्षा शस्त्रास्त्रों, रक्षा सौदों रक्षा बजट का ज्ञान देते देते बोलने लगता है रक्षा मंत्री को क्या करना चाहिए, सेनाध्यक्ष को क्या करना चाहिये आदि। यह स्थिति यहाँ ही नहीं थम जाती अगले ही पल यह सर्वज्ञ आपको आर्थिक, शिक्षा, चिकित्सा किसी भी विषय पर आधिकारिक ज्ञान, सूचना या भाषण देते हुए पाया जा सकता है दर्शक जैसे कुछ जानता हि नहीं। उद्देश्य होता है भोली जनता में पैठ बनाना और टी आर पी बढ़ाना ताकि अधिक से अधिक विज्ञापन पाए जा सकें साथ ही एक्स्पोज के डर से शासन प्रशासन में अपनी दहशत बनायी जा सके। इस इलेक्ट्रोनिक मीडिया का एक और आयाम है - वागयुद्ध यानि डिबेट। यह आम हो गया है वही घिसे पिटे चेहरे ,पक्ष विपक्ष और सर्वगुण संपन्न हर विषय पर सुविज्ञ एंकर या उद्घोषक। कोई विषय-समाचार लेकर एंकर जज साहब बन कर बैठ जायेंगे और शुरू हो जायगा वागयुद्ध। वाद विवाद विद्वानों के मध्य विचारों का आदान प्रदान है विचारों का युद्ध विद्वदता की पहचान है परन्तु टी वी डिबेट में अक्सर अर्थहीन बहस के अतिरिक्त कुछ नहीं होता , शालीनता के मामले में सड़क पर होने वाले श्वान युद्ध में शायद कुछ अधिक शालीनता होती हो। पक्ष विपक्ष के मध्य मीडिएटर महोदय अतिथियों को बोलने का मौका तक नहीं देते, अपने विचार जोर जोर से चिल्ला कर अतिथियों तथा दर्शकों पर थोपते नजर आते है। अतिथियों में भी अक्सर शालीनता, शिष्टाचार एवं अनुशासन का अभाव होता है। चिल्ल पों जिसमे वादी प्रतिवादी एंकर सभी चीख रहे होते है, सुननेवाले को कुछ समझ नहीं आता मसला क्या है ? कौन क्या कहना चाह रहा है , इसी के मध्य होता है विज्ञापन अंतराल का अबाध सिलसिला। तीस चालीस मिनिट की मारामारी के बाद वाद विवाद निष्कर्षहीन समाप्त हो जाता है। ध्येय कुछ मनीषी मंथन नहीं होता मात्र दर्शकों को अपनी छद्म रूचि दिखाना और टी आर पी कमाना। अक्सर टी वी पर धुर विरोधी युद्ध वीर डिबेट के पहले, बाद में स्टूडियो में हंस कर कॉफी पीते , गलबहियाँ किये स्टूडियो से बहार निकलते-बाई सी यु अगेन, करते मिलेंगे। एक और आयाम है, कम्प्यूटर ग्राफिक्स के चरम दुरूपयोग का जिसके द्वारा ये देश की जनता को भ्रमित करते रहते है। बड़ी बड़ी रिपोर्ट्स दिखाई जाती है झ थरार्ता हुआ पकिस्तान, अब पाकिस्तान के छक्के छूटेंगे, कांपता चीन, किम जोन उन ने ट्रम्प को सीधे धमकी दी,कौन जहाज कैसे उड़ कर पाकिस्तान को बर्बाद कर देगा। ये कहीं ग्राफिक्स से डराते हैं कहीं लुभाते है सत्यता से परे जन मानस को भरमाते है। तनाव पैदा करने और हाय तौबा मचने में भी ये अपनी सानी नहीं रखते। स्वयम्भू न्यायाधीश एक और पक्ष है इस चौथे स्तंभ के इलेक्ट्रोनिक तंत्र का। आधे घंटे बीस मिनिट के विशेष रिपोर्टिंग या न्यूज बुलेटिन में जब ये किसी की भी बखिया उधेड़ कर रख देंगे। इनके विशेष निशाने होते है जो जनता की दुखती नस होते है। पाजीटीविटी का अभाव इलेक्ट्रिक मीडिया का सबसे बड़ा दोष है। कभी भी कोई भी समाचार चेनल खोला जाय एहसास होता है दुनिया में कहीं कुछ अच्छा नहीं हो रहा है। सारे समाचारों में बलात्कार हत्या भयंकरतम दुर्घटनाएं अपराध, प्राकृतिक आपदा राजनैतिक उठापटक ही प्राथमिकता से होंगे। पूरी न्यूज बुलेटिन में आँख कान तरस जाते है कुछ अच्छा सुनने को, बुरे से बुरा घूम घूम कर परोसा जाता है। देश दुनिया में निश्चित सकारात्मक भी होता है, वह क्यूँ घूम घूम कर कर्णप्रिय ध्वनि प्रभाव के साथ नहीं दिखाया जा सकता।

व्यक्तिवाद या व्यक्तिपूजा यूँ तो यह मानव स्वभाव है पर आज के हालत में पूरी दुनिया सहमी भयभीत है पर जब टी वी खोलो सिर्फ नकारात्मक ही खुलता है। कोरोना आपदा प्रकृतिक है या मानव आमंत्रित, है तो त्रासदी। हर तरफ अफरा तफरी मौत का तांडव, फिर पलायन की नकारात्मकता मारा मारी पत्थरबाजी। माना सब सच है तो भी क्या, शासन के प्रयत्न क्षमता से अधिक नहीं हो रहे हैं। फिर सीमा के तनाव भी आतंकी हमले भी। दुनिया की दुर्दशा से इंकार नहीं सब दिखाओ पर कुछ तो संतुलन रखो। मानव मन कोमल होता है कितना अवसाद परोसोगे कुछ तो तरस खाओ। सूचना का अधिकार है सूचना दो डराओ मत। कभी कभी लगता है देश में यदि गृह युद्ध हुआ तो उसका दोषी नकारात्मक इलेक्ट्रोनिक मीडिया ही होगा। हमें अपनी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को यदि सदाबहार जीवित व दृढ़ रखना है तो आवश्यक है स्वयं भाव से ऊपर उठ कर पत्रकारिता के गुण दोषों को पहचाने , इंगित करें, आवाज उठायें और मीडिया को भी शास्वत सूचना तंत्र बन कर उभारना होगा, टी. आर. पी. ज्यादा मोह से निकलना होगा, अभी किसानों के धरने में पूछता भारत की लालफीताशाही में लिपटी गलत रिपोर्टिंग की वजह से हरियाणा व पंजाब के किसानों ने उनके रिपोर्टस से बात तक नहीं की और सही रिपोर्ट्रिंग पंजाब व हरियाणा की मीडिया ने करके सबको चौंकाने वाला काम किया क्योंकि मीडिया को सरकारों का नहीं बल्कि जनता के दुख के साथ खड़ा होना चाहिए। मीडिया को प्रबुद्ध कहा जा सकता है वरना तो वह आज के युग की त्रासदी है ही है।

**मो. जहांगीर**
महासचिव इंडियन रिपोर्टर्स एसोसिएशन

दैनिक
मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर



# मुंबई में ऑपरेशन ऑल आउट

## सिर्फ 3 घंटे में 362 अपराधियों के घर जाकर हुई पूछताछ, 22 तड़ीपार आरोपियों को किया गया गिरफ्तार

**मुंबई।** महानगर में बढ़ते अपराधों के खिलाफ लगाम लगाने के लिए मुंबई पुलिस ने ऑपरेशन ऑलआउट के तहत बड़ी संख्या में अपराधियों पर शिकंजा कसा। शुक्रवार रात 11 बजे शुरू हुआ ऑपरेशन शनिवार रात 2 बजे तक चला। सिर्फ 3 घंटे में ऐसे 362 ऐसे आरोपियों की जांच की गई जिनके खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। इसके अलावा ऑपरेशन के दौरान पुलिस ने ऐसे 22 अपराधियों को पकड़ा जो तड़ीपार होने के बाद भी मुंबई में मौजूद थे। साथ ही 48 फरार आरोपी भी पुलिस के हत्थे चढ़े। एनडीपीएस कानून के तहत इस दौरान 53 मामले दर्ज किए गए। इनमें से 44 नशीले पदार्थों के सेवन के थे। आरोपियों से एमडी और गांजा भी बरामद किया गया है। ऑपरेशन ऑलआउट के दौरान पुलिस ने महानगर के 851 होटलों, लॉज की तलाशी ली और 861 ठिकानों पर नाकेबंदी के दौरान 7562 वाहनों की जांच की।

**428 ठिकानों पर हुआ पैदल गश्त:** इसके अलावा, 189 ठिकानों पर कॉबिंग ऑपरेशन और 428 ठिकानों पर पैदल गश्त भी किया गया। ऑपरेशन के दौरान पुलिस ने ऑपरेशन ऑलआउट में सभी पुलिस स्टेशनों के ज्यादातर पुलिसकर्मी शामिल हुए। मुंबई पुलिस के प्रवक्ता डीसीपी चैतन्य एस के मुताबिक, ऑपरेशन ऑलआउट के तहत हिस्ट्रीशीटरों की जांच करने, संदिग्ध लोगों की तलाश में होटल और मुसाफिर खानों की तलाशी करने, फरार आरोपियों को पकड़ने, संवेदनशील इलाकों में गश्त कर लोगों के मन में सुरक्षा का माहौल पैदा करना था।

## 'लोगों को स्वेच्छा से किसानों के 'भारत बंद' का समर्थन करना चाहिए'

**संवाददाता**

**मुंबई।** शिवसेना के सांसद संजय राउत ने सोमवार को कहा कि किसानों द्वारा मंगलवार को किया गया 'भारत बंद' का आह्वान गैर राजनीतिक है और देश के लोगों को कृषकों के प्रति समर्थन प्रकट करने के लिए स्वेच्छा से उसमें भाग लेना चाहिए। राउत ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में इस बंद के प्रति शिवसेना का समर्थन भी दोहराया। शिवसेना के अलावा सत्तारूढ़ महाराष्ट्र विकास आघाड़ी के दो अन्य घटकों-राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस ने भी इस बंद का समर्थन करने की घोषणा की है। कई राजनीतिक दलों समेत कई क्षेत्रीय

संगठन किसान संगठनों द्वारा आठ दिसंबर को किये गये भारत बंद के आह्वान के समर्थन में आ गये हैं। ये किसान संगठन केंद्र के नये कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग करते हुए 11 दिनों से दिल्ली की सीमाओं पर डेरा डाले हुए हैं। राउत ने कहा, लोगों को बंद में स्वेच्छा से भाग लेना चाहिए। इससे किसानों के प्रति सच्चा समर्थन प्रदर्शित होगा। यह राजनीतिक बंद नहीं है। वैसे कई दलों ने इसमें हिस्सा लेने का निर्णय लिया है। राज्यसभा सदस्य ने कहा, यह किसी राजनीतिक पार्टी की मांगों को उठाने के लिए नहीं बल्कि देश के किसानों की आवाज मजबूत करने के लिए बंद है। उन्होंने कहा कि किसान ठंड और सरकार के उत्पीड़न की परवाह किये बिना ही दिल्ली की सीमाओं पर 12 दिनों से प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा, इसलिए, किसानों का समर्थन करना हर नागरिक का कर्तव्य है।

## पवार ने वाजपेयी सरकार के कृषि काननू को लागू करने के लिए राज्यों को मनाया था : राकांपा

**मुंबई।** राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने सोमवार को कहा कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) के नेतृत्व वाली सरकार में बतौर कृषि मंत्री शरद पवार ने कई 'अनिच्छुक' राज्यों से अटल बिहारी वाजपेयी नीत सरकार के एपीएमसी कानून को लागू करने के लिए समझाया था। सरकार के सूत्रों ने केंद्रीय मंत्री के तौर पर पवार द्वारा इस संबंध में कई मुख्यमंत्रियों को लिखे पत्र का अंश साझा किया। इसके बाद राकांपा के प्रवक्ता महेश तपासे ने इस बारे में जानकारी दी। तपासे ने कहा, मॉडल कृषि उत्पाद विपणन समिति (एपीएमसी) अधिनियम, 2003 को वाजपेयी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार ने शुरू किया था। उस वक्त कई राज्य सरकारें इसे लागू नहीं करना चाहती थीं। तपासे ने एक बयान में कहा, केंद्रीय कृषि मंत्री के तौर पर कार्यभार संभालने के बाद पवार ने राज्यों के कृषि विपणन बोर्डों के साथ व्यापक सहमति बनाने की कोशिश की और कानून को लागू करने के लिए उनसे सुझाव मांगे। तपासे ने कहा, एपीएमसी काननू के प्रारूप के अनुसार किसानों को होने वाले फायदे के बारे में उन्होंने (पवार) कई

राज्य सरकारों को अवगत कराया, जिसे लागू करने पर वे सहमत हुए। कानून के लागू होने से देशभर के किसानों को लाभ हो रहा है। किसानों के हितों की रक्षा के लिए पवार ने इस कानून में कुछ बदलाव किया था। तपासे ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा लाए गए नये कृषि कानून ने संदेह पैदा किया है और इसने न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसे मुद्दों के संबंध में किसानों के मन में असुरक्षा का भाव पैदा किया है। उन्होंने कहा, भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार इस नये कृषि कानून में अन्य कई मुद्दों का समाधान करने में नाकाम रही है, जिसके कारण इतने बड़े पैमाने पर देश भर के किसान विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष)

## आज भारत बंद

इसे लेकर केंद्र सरकार ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए देशव्यापी परामर्श जारी किया है। इसमें सरकार ने कहा है कि बंद के दौरान सुरक्षा कड़ी की जाए और शांति सुनिश्चित की जाए। वहीं, कांग्रेस ने कहा है कि भारत बंद के दौरान लोगों को होने वाली किसी भी समस्या के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार होगी। बंद को लेकर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने देशव्यापी परामर्श में कहा है कि राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेश के प्रशासकों को सुनिश्चित करना चाहिए कि कोविड-19 दिशानिर्देशों का पालन किया जाए और सामाजिक दूरी बनाए रखी जाए। बता दें कि कांग्रेस, एनसीपी, द्रमुक, सपा, टीआरएस जैसे दलों ने बंद का समर्थन किया है। गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि मंत्रालय की ओर से जारी परामर्श में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को बताया गया है कि आठ दिसंबर को होने वाले 'भारत बंद' के दौरान शांति व्यवस्था व धैर्य बनाए रखा जाए और एहतियाती कदम उठाए जाएं ताकि देश में कहीं भी अप्रिय घटना नहीं हो। भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता राजेश टिकैत ने कहा, हमारा विरोध शांतिपूर्ण है और हम इस तरह ही इसे जारी रखेंगे। कल का भारत बंद सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक है। यह हमारा विरोध दर्ज करने का सांकेतिक विरोध है। यह दिखाना है कि हम भारत सरकार की कुछ नीतियों का समर्थन नहीं करते हैं। टिकैत ने कहा कि हम आम आदमी के लिए समस्याएं पैदा नहीं करना चाहते। इसलिए, हम सुबह 11 बजे बंद शुरू करेंगे, ताकि वे अपने समय पर कार्यालय के लिए निकल सकें। कार्यालयों में काम के घंटे दोपहर तीन बजे तक समाप्त हो जाएंगे। एंबुलेंस, यहां तक कि शादियों जैसी सेवाएं भी हमेशा की तरह चल सकती हैं। वाम मोर्चा के अध्यक्ष विमान बोस ने सोमवार को पश्चिम बंगाल के लोगों से नए कृषि कानूनों के खिलाफ आठ दिसंबर को किसान संगठनों की ओर से आहूत भारत बंद को पूरी तरह सफल बनाने की अपील की। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि इस आंदोलन एवं बंद को सफल बनाएं। विमान बोस ने 16 वाम दलों और सहयोगी दलों की ओर से यह अपील करते हुए कहा कि प्रदर्शन कर रहे किसान केंद्र से कृषि कानूनों एवं बिजली (संशोधन) विधेयक 2020 को वापस लिए जाने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों का यह आंदोलन ऐतिहासिक हो गया है। व्यापारियों के संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) और ट्रांसपोर्टरों के संगठन आल इंडिया ट्रांसपोर्टर्स वेलफेयर एसोसिएशन (एआईटीडब्ल्यूए) ने किसान संगठनों द्वारा मंगलवार को बुलाए गए ह्यभारत बंदह्ल से अलग रहने की घोषणा की है। कैट ने सोमवार को कहा कि नए कृषि कानूनों के खिलाफ मंगलवार को किसानों के 'भारत बंद' के दौरान दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में बाजार खुले रहेंगे। वहीं एआईटीडब्ल्यू ने भी घोषणा की है कि 'भारत बंद' के दौरान परिवहन या ट्रांसपोर्ट क्षेत्र का परिचालन सामान्य बना रहेगा। किसानों द्वारा बुलाए गए इस भारत बंद को कांग्रेस समेत अन्य राजनीतिक दल समर्थन दे रहे हैं। इनमें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), द्रमुक, समाजवादी पार्टी, तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) और वामपंथी दल शामिल हैं। रेलवे यूनियन ने भी भारत बंद को अपना समर्थन दिया है, ऑल इंडिया रेलवेमैन फेडरेशन (एआईआरएफ) ने कहा है कि रेलवे यूनियन के सदस्य किसानों के साथ हैं।

## सुशांत की मौत का मामला

# 4 महीने बाद भी सीबीआई की चुप्पी पर उठे सवाल

## फिर सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामला

संवाददाता

**मुंबई।** अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत मामले में जांच कर रही सीबीआई के काम के तरीकों पर सवालियां निशान लगाते हुए एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर हुई है। याचिका में इतनी लंबी जांच के बावजूद सीबीआई की चुप्पी पर सवाल उठाएं गए हैं। सुशांत 14 जून को मुंबई के बांद्रा स्थित अपने फ्लैट पर मृत पाए गए थे। अधिवक्ता विनीत ढांडा के माध्यम से दायर की गई याचिका में शीर्ष अदालत से एजेंसी को दो महीने में जांच पूरी करने और इसके संबंध में एक रिपोर्ट पेश करने का निर्देश देने का आग्रह किया है। याचिका में कहा गया है कि करीब चार महीने पहले शीर्ष अदालत ने सीबीआई को राजपूत की मौत

के मामले की जांच करने का निर्देश दिया था। याचिका में कहा गया है, शीर्ष अदालत ने देश की प्रमुख जांच एजेंसी पर गंभीर विश्वास व्यक्त किया और दिवंगत अभिनेता की अप्राकृतिक मौत की जांच का निर्देश दिया, क्योंकि उनकी मृत्यु ने पूरे देश को हिला दिया था और यहां तक कि विदेशों में भी उनके प्रशंसकों को राजपूत की अप्राकृतिक मौत से झटका लगा। याचिका में कहा गया है कि इस अदालत ने 19 अगस्त, 2020 को सीबीआई जांच के लिए एक आदेश पारित किया था और अब लगभग चार महीने बीतने के बावजूद सीबीआई ने अपनी जांच समाप्त नहीं है। इसमें कहा गया है कि सुशांत की मौत के मामले में उनके परिवार के सदस्यों के साथ ही उनके प्रशंसकों और शुभचिंतकों को अभी तक उनकी मौत के सटीक कारण का पता नहीं चल सका है।

**जांच पूरी करने के लिए तय हो समय सीमा:** याचिकाकर्ता ने दलील दी कि अदालत को इस जांच के लिए अब दो महीने की समय सीमा तय कर देनी चाहिए, ताकि समय पर निष्कर्ष निकल सके। इसके साथ ही शीर्ष अदालत से यह भी मांग की गई है कि वह सीबीआई को निर्देश जारी करे कि वह अपनी जांच के संबंध में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करे। याचिका में कहा गया है, सीबीआई वर्तमान मामले में जिम्मेदारी से काम नहीं कर रही है और मामले की जांच के समापन में देरी हो रही है।

# चीन की पैंतरेबाजी

## गुजरात सीमा के पास तैनात किए लड़ाकू विमान और सैनिक

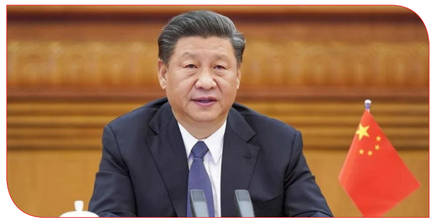

संवाददाता

**बीजिंग।** पूर्वी लद्दाख में भारत-चीन सीमा पर दोनों देशों के बीच जारी विवाद अभी शांत नहीं हो पाया है और चीन ने फिर अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया है। चीन ने अब पाकिस्तान की सेना के साथ सैन्य अभ्यास करने की योजना बनाई है और इसके लिए उसने गुजरात सीमा के पास बने पाकिस्तानी एयरबेस के लिए लड़ाकू विमान और सैनिक रवाना किए हैं। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने अपने बयान में कहा है चीनी वायु सैनिकों ने अभ्यास शाहीन (ईगल) क में भाग लेने के लिए पाकिस्तान के भोलारी में स्थित पाकिस्तानी वायु सेना के एयरबेस के लिए उड़ान भरी है। बयान के मुताबिक यह पाकिस्तान और चीनी वायु सेना का संयुक्त अभ्यास है, यह अभ्यास दिसंबर के अंत में समाप्त होगा। साथ ही कहा है कि इससे चीन और पाकिस्तान के सैन्य रिश्ते मजबूत होंगे। गौरतलब है कि भारत से चीन की तनातनी के बाद पाकिस्तान और चीन की नजदीकी कुछ ज्यादा ही बढ़ गई है। पाकिस्तान में चीनी आधिकारियों का दौरा भी बढ़ गया है। चीन ने भारत से लगती एलएसी के करीब लड़ाकू विमानों की तैनाती की हुई है।

# लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2020 का आयोजन सम्पन्न

**मुंबई।** हाल ही में अंधेरी पश्चिम स्थित मेयर हॉल में लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड 2020 का आयोजन कृष्णा चौहान फाउंडेशन के अंतर्गत धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवार्ड शो के आयोजक कृष्णा चौहान हैं जो बॉलीवुड और सामाजिक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले लोगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह अवार्ड शो करने का बीड़ा उठाया है। इस शानदार कार्यक्रम में सुधाकर शर्मा, संगीतकार दिलीप सेन, सिंगर शाहिद मालया, अभिनेता सुनील पाल, अजाज खान, ब्राइट आउटडोर के संचालक डॉ योगेश लखानी, अरविंद वाघेला, दीपा नारायण झा, आज तक की चारु मलिक, के के गोस्वामी, अप्पू राजा, जेबा काजी,

नाफे खान, अली खान, मॉडल एक्ट्रेस रूबी अहमद की विशेष उपस्थिति रही। लीजेंड दादा साहेब फाल्के अवार्ड, बॉलीवुड में डिजिटल मार्केटिंग को ऊंचाई देने वाले इंकिंग आइडियाज के संचालक वसीम अमरोही के अलावा फिल्मी मंत्रा के संचालक मुतुर्जा इब्राहिम रंगवाला, एक्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर सोहैल अब्बास, निमार्ता संदीप नागराले, करणी सेना की मुम्बई अध्यक्ष डॉ रिचा सिंह, लेखिका तृष्णा प्रकाश सामत, समाजसेविका अनिता तावड़े, सामाजिक कार्यकर्ता मयंक शेखर, अविनाश गोयल, शब्बीर शेख, डॉ रहमान शेख, सिंगर राधे राधे सहित पत्रकारों में संतोष साहू, सोहेल फिदाई, अमित मिश्रा, कृष्णा के. शर्मा, गायत्री साहू, संदीप कुमार के (एस. के. डे), जितेंद्र शर्मा, दैनिकभास्कर के प्रमोद तेवतिया, राजकुमार तिवारी, नरेंद्र शर्मा, राजा राम सिंह, जयेश गोहिल, प्रेस फोटोग्राफर राजेश कोरिल, अब्दुल कादिर को प्रदान किया गया। साथ ही सभी को कोरोना वारियर सर्टिफिकेट और सम्मान चिन्ह भी दिया गया। इस कोरोना महामारी के समय में सभी अतिथि और अवार्डी ने सरकारी आदेशानुसार मास्क और सोशल डिस्टेंस का पालन करने की कोशिश की। लंबे लॉकडाउन के बाद लीजेंड दादा साहब फाल्के अवॉर्ड 2020 ने सभी के चेहरे पर खुशी भर दी। अवार्ड शो में दर्शकों का मनोरंजन करने हेतु नृत्य गीत संगीत भी रखा गया था। स्टैंडअप कॉमेडियन सुनील पाल ने सभी का भरपूर मनोरंजन किया। शाहिद माल्या ने भी एक गीत गाया और शिरीन फरीद की खूबसूरत नृत्य प्रस्तुति से समां बंध गया।

# 'ताजमहल' पर फिदा बीएमसी देगी 10 करोड़ की शुल्क माफी

संवाददाता

**मुंबई।** देश की वैभवशाली नगर निकाय बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) प्रशासन 'ताजमहल' पर फिदा है। चौंकिए नहीं, हम आगरा के ताजमहल की नहीं बल्कि मुंबई में गेट वे ऑफ इंडिया के सामने समुंदर के किनारे बने आलीशान ताजमहल होटल पैलेस की बात कर रहे हैं। बीएमसी ने होटल ताज के लिए करोड़ों रुपये शुल्क माफी देने की तैयारी की है। यद्यपि वैश्विक कोरोना महामारी संकट के कारण बीएमसी खुद आर्थिक संकट में है और तिजोरी खाली है। फिर भी बीएमसी ने बड़ा दिल दिखाया है। बीएमसी मुंबई में हर चीज के लिए टैक्स लेती है। सड़क से लेकर फुटपाथ, घर से लेकर पानी, बिजली, सीवरेज आदि अनेकों तरह के टैक्स

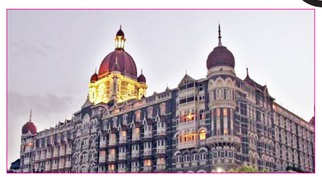

वसूलती है। बीएमसी के इसी टैक्स की चपेट में पंचसितारा होटल ताजमहल पैलेस भी है। ताजमहल होटल का साल 2009 से लेकर जनवरी 2020 तक फुटपाथ व सड़क का करोड़ों रुपये शुल्क बाकी है। इसे बीएमसी माफ करने के लिए तैयार हुई है। इसके लिए बीएमसी की स्टैंडिंग कमेटी (स्थाई समिति) में एक प्रस्ताव आया है जिसमें ताजमहल होटल के सामने फुटपाथ का शत प्रतिशत व सड़क का 50 प्रतिशत शुल्क माफ करने का प्रस्ताव है। मुंबई में 26/11 आंतकी हमले में होटल ताजमहल सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ था। इस घटना के बाद सुरक्षा के मद्देनजर होटल ने सामने की सड़क व फुटपाथ को बैरिकेड कर किसी के भी इस्तेमाल पर रोक लगाई गई है। तब से उस जगह का इस्तेमाल होटल मैनेजमेंट ही कर रहा है। जनवरी 2009 से जनवरी 2020 तक फुटपाथ के इस्तेमाल में होटल पर बीएमसी का 8,85,63,222 रुपये और जून 2009 से जनवरी 2020 तक 1,33,5600 रुपये सड़क का शुल्क बाकी है।

**गरीबों की नहीं उद्योगपतियों की फिक्रमंद है प्रशासन : रविराजा –** बीएमसी में विपक्ष ने इस प्रस्ताव का विरोध किया है। विपक्ष के नेता रविराजा ने कहा कि गरीबों के पानी का बिल माफ करने में बीएमसी को परेशानी हो रही है, जबकि बड़े उद्योगपतियों के करोड़ों माफ करने में कोई संकोच नहीं हो रहा है। हम कोरोना संकट का सामना कर रहे हैं। फिक्स डिपॉजिट तोड़ कर बीएमसी स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च कर रही है। ऐसे समय में किसी होटल या उद्योगपति का शुल्क माफ करना गलत है। मैं इसका कड़ा विरोध करूंगा। बीएमसी में शिवसेना की सत्ता है। हालांकि मुख्य विपक्षी दल भाजपा है। लेकिन तकनीकी रूप से विपक्ष के नेता का पद कांग्रेस के पास है जो बीएमसी में संख्याबल के लिहाज से तीसरी बड़ी पार्टी है। शिवसेना–भाजपा में अनबन के कारण कांग्रेस–एनसीपी– सपा पार्षदों के समर्थन से शिवसेना बीएमसी में निश्चिंत होकर काम कर रही है। लेकिन ताज को शुल्कमाफी दिए जाने के मुद्दे पर कांग्रेस का मुखर विरोध है। ऐसी स्थिति में यदि स्थायी समिति में वोटिंग की नौबत आई तो शिवसेना का गणित गड़बड़ा सकता है।

# भारत में कोरोना वैक्सीनों के आपात इस्तेमाल के आवेदनों पर कल होगा विचार

संवाददाता

**नई दिल्ली।** भारत में कोरोना वायरस की वैक्सीनों के आपातकालीन इस्तेमाल की अनुमति संबंधी आवेदनों पर केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) बुधवार को विचार करेगा। यह जानकारी सोमवार को सूत्रों ने दी। बता दें कि भारत में फाइजर, सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बायोटेक ने वैक्सीन के आपात इस्तेमाल की अनुमति मांगी है। सीरम इंस्टीट्यूट की ओर से कोविशील्ड वैक्सीन के आपात इस्तेमाल के लिए मांगी गई अनुमति पर डीजीसीआई (ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया) अगले 10 दिन के अंदर मुहर लगा सकता है। बता दें कि आगरा मेट्रो के शिलान्यास के मौके पर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि देश को अब

वैक्सीन के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना होगा। सूत्रों ने बताया, हालांकि इनमें से अभी तक कोई भी आवेदन समिति को नहीं भेजा गया है और इस बारे में कोई तारीख तय नहीं की गयी है। उल्लेखनीय है कि फाइजर को ब्रिटेन और बहरीन में अपनी वैक्सीन के आपात इस्तेमाल की अनुमति मिल चुकी है। ब्रिटेन किसी वैक्सीन को आपात इस्तेमाल की मंजूरी वाला पहला देश भी बन गया है। सीरम इंस्टीट्यूट ने ऑक्सफोर्ड के कोविड-19 टीके 'कोविशील्ड' के लिए छह दिसंबर को इस संबंध में मंजूरी मांगी थी। चार दिसंबर को फाइजर ने केंद्रीय औषधि नियामक से टीके के आपात उपयोग की मंजूरी मांगी थी। वहीं, भारत बायोटेक ने सोमवार को टीके के आपात उपयोग की अनुमति के लिए केंद्रीय औषधि नियामक में आवेदन किया।

## समस्तीपुर हलचल

# किसान खुद एक वैज्ञानिक है: डी.ए.ओ. विकास कुमार

**संवाददाता/जकी अहमद**

**समस्तीपुर।** ताजपुर प्रखंड के भिविन्न पंचायतों में कृषि विभाग के द्वारा निर्माण किये गए जैविक समूह के अध्यक्ष एवं समूह के सदस्यों का ई०किसान भवन ताजपुर के सभा कक्ष में जिला कृषि पदाधिकारी समस्तीपुर विकास कुमार ने कृषकों के साथ बैठक की जिसमे समूह में आने वाली समस्याओं का निराकरण मौके पर किया साथ ही कृषकों को प्रशिक्षण देते हुए उन्होंने कहा कि 'किसान खुद एक वैज्ञानिक है, जो अपने खेतों में निरंतर नए-नए प्रयोग करते रहते है' अगर किसान वैज्ञानिक ढंग एवं कउर मैनेजर के द्वारा बातये गए तकनीक से खेती करते हैं तो निशिचत रुप से किसानों की आय दुगुनी हो जाएगी। उन्होंने समूह के आन्तरिक नियंत्रक प्रणाली

प्रबंधक को भी विशेष रूप से जैविक समूह के खेत को हमेशा निरीक्षण करते रहने की आदेश दिया। विकास कुमार, जिला कृषि पदाधिकारी ने कहा की जैविक खेती समूह में करने से विपणन की समस्या से किसान को निजात मिल जाएगा और उत्पाद का दाम भी अधिक मिलेगा। प्रत्येक किसान चाहता है कि उसकी फसल का उत्पादन अधिक हो एवं लागत कम,परंतु वर्तमान में कृषि में लागत दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है एवं उत्पादन लगातार कम होते जा रहा है इसका कारण भिविन्न प्रकार के रासायनिक खादों का असंतुलित मात्रा में किसान अंधाधुंद प्रयोग कर रहे है जिसके कारण हमारा जमीन कठोर एवं बंजर होते जा रहा है ,जैविक खेती का मुख्य उद्देश्य रासायनिक उर्वरकों को कम करके गुणवत्ता युक्त उत्पाद को उत्पादन करना है। वैशाली के उप परियोजना निदेशक 'आत्मा' रमन कुमार रमन ने भी किसानों को जैविक खेती के बारे में प्रशिचित किया, नोडल पदाधिकारी जैविक खेती सह सहायक निदेशक पौधा सरंक्षण रवींद्र महतो, सहायक निदेशक (रसायन) अभिषेक कुमार, सहायक निदेशक (कृषि अभियंत्रण) डॉ०दीपक कुमार ने भी जैविक समूह पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रशिक्षण कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी विनय कुमार ने की।

# पोखर उड़ाही के नाम पर 9 लाख रू० फर्जीवाड़ा के आरोपियों पर एफआईआर दर्ज करने को लेकर माले ने किया प्रदर्शन

**संवाददाता/जेड अहमद**

**समस्तीपुर।** ताजपुर पंचायत के वार्ड-5 स्थित रामदयाल चौक के पानी भरा पांडे पोखर का नवंबर में उड़ाही के नाम पर मुखिया श्री जवाहर साह द्वारा अधिकारियों एवं कर्मियों के सहयोग से 9 लाख रुपए फर्जीवाड़ा कर निकासी किए जाने के खिलाफ आरोप की जांच कर आरोपियों पर एफआईआर करने की मांग को लेकर सोमवार को उक्त पोखर पर भाकपा माले के कार्यकर्ताओं द्वारा जमकर प्रदर्शन किया गया। सुबह से ही माले कार्यकर्ता झंडे, बैनर, कार्डबोर्ड लेकर जुटने लगे, करीब 11 बजे माले कार्यकर्ताओं ने रामदयाल चौक से विशाल जुलूस निकाला। जोरदार नारेबाजी करते पोखर पर पहुंचकर प्रदर्शन के बाद सभा में तब्दील हो गया। ब्रहमदेव प्रसाद सिंह, आशिफ होदा, नौशाद तौहीदी, शंकर सिंह, संजय शर्मा, बासुदेव राय, मो० चांदबाबू, मो० राजू, राजदेव प्रसाद सिंह,ऐपवा जिलाध्यक्ष बंदना सिंह, सुखदेव सिंह, बिन्देश्वर राय, लक्ष्मण साह, मुंशीलाल राय, अर्जुन शर्मा, मोतीलाल सिंह, विनोद शर्मा, मनोज सिंह आदि ने सभा को संबोधित किया। मौके पर प्रखंड सचिव सुरेन्द्र प्रसाद सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि पांडे पोखर जलमग्न है। बाबजूद इसके मुखिया श्री जवाहर साह अधिकारी एवं कर्मियों को मिलाकर नवंबर में पानी भरा पोखरा का फर्जी उड़ाया दिखाकर करीब 9 लाख रुपए का अवैध निकासी कर लिया है। इससे पहले भी मुखिया द्वारा कई योजनाओं लूट-भ्रष्टाचार का मामला सामने आ चुका है लेकिन इस बार का भ्रष्टाचार बिल्कुल स्पष्ट है, ऐसे में विकास योजनाओं में लूट-भ्रष्टाचार रोकने की जिम्मेवारी के तहत माले अपने जनपक्षीय भूमिका का निर्वाह करते हुए संघर्ष कर रही है। प्रशासन दोषियों पर एफआईआर दर्ज करें, निकाले गये राजस्व को जमा कराये अन्यथा 16 दिसंबर से प्रखंड पर अनिश्चितकालीन अनशन आंदोलन चलाने की उन्होंने घोषणा की,उन्होंने आमजनों से अपील किया है की 8 दिसंबर को किसानों के भारत बंद पर 9 बजे से गांधी चौक से निकलने वाले बंदी जुलूस में शामिल होकर सफल बनाने की की।

## रामपुर हलचल

# नगर के अन्दर मतदान स्थलों पर अनेक वार्डो में विधान सभा निर्वाचन नामावलियों में सरकार के आदेशानुसार पुनरिक्षण अभियान चलाकर वोटर लिस्टों में नाम बढ़ाये जाने एवं घटाये जाने का कार्य लगातार जारी

**संवाददाता/नदीम अख्तर**

**टाण्डा रामपुर।** नगर के अन्दर मतदान स्थलों पर अनेक वार्डो में विधान सभा निर्वाचन नामावलियों में सरकार के आदेशानुसार पुनरिक्षण अभियान चलाकर वोटर लिस्टों में नाम बढ़ाये जाने एवं घटाये जाने का कार्य लगातार जारी है नामों के शुद्धीकरण के कार्य को भी बखूबी अन्जाम दिया जा रहा है बी.एल ओ एवं उच्च अधिकारियों का मतदान केन्द्रों पर भ्रमण भी जारी है साथ ही वोटर लिस्टों में खामियों को देखते हुए शीघ्र ही उनका निस्तारण किये जाने को लेकर फार्म भरे जाने के कार्य को कार्यवाही किये जाने को लेकर अन्जाम दिया जा रहा है उपकोषागार, प्राथमिक विद्यालय काजीपुरा एवं अन्य स्थानों पर बने बूथ, केन्द्रों पर बी एल ओ के रूप में तैनाती की गई है उनकी सहायता के लिए आंगनबाडियों कार्यकत्री को भी तैनात किया गया है वोटर लिस्टों में सभी प्रकार की त्रुटियों का निस्तारण किये जाने के प्रयास किये जा रहे हैं नगरीय जनता को किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ रहा है बल्कि उनका सहयोग कर उनका निपटारा किया जा रहा है उधर पालिकाध्यक्ष ने अपने कार्य कर्ताओं के साथ नगर के अन्दर लगने वाले समस्त पोलिंग बूथों का मौका मुआयना कर कहा कि बी.एल. ओ के माध्यम जो कार्य किया जा रहा है वह संतुष्टता के लायक है आगे कहा कि अपनी मेहनत के चलते परिवार वालों के लिए अच्छा है इसमें वोट की कोई राजनीति नहीं है आई.डी. प्रूक के आधार पर ही कार्य को अन्जाम दिया जा रहा है वर्ष 2021 में 18 वर्ष के हो रहे हैं वह अपना नाम वोटर लिस्ट में अवश्य शामिल करा लें इससे कोई वंचित न रह सके किसी भी प्रकार की समस्या आप के सामने उत्पन्न होती हैं तब ऐसी दशा में अपने आई डी प्रूफ तैयार कर निम्न फार्मो के अन्तर्गत अपनी समस्या का समाधान अवश्य करवा लें इसमें हर सम्भव नगर वासियों का सहयोग तत्पर रहेगा वोटर लिस्टों में नाम बढ़ाये जाने को लेकर उलेमाओं के माध्यम से भी जागरूक किया जा रहा है जितना भी कार्य उलेमाओं की जागरूकता को लेकर किया जा रहा है वह सराहनीय है।

## बुलढाणा हलचल

# पत्नी और बच्चे की धारदार हथियार से हत्या

**बुलडाणा।** एक 45 वर्षीय व्यक्ति को उसकी पत्नी और बेटे ने चाकू मारकर हत्या कर दि ये शर्मसार करने वाली घटना रविवार को रात करीब 10.30 बजे मोतला तहेसील के गोशिंग में हुई। बोरखेड़ी पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। विवरण के अनुसार, बोरखेडी पुलिस स्टेशन के तहत गोशिंग का एक 55 वर्षीय व्यक्ति शराब का आदी था। रविवार रात शराब को लेकर उस व्यक्ति का अपनी पत्नी और बेटे के साथ झगड़ा हुआ था।

इस झगड़े का कारण यह बच्चे ने अपनी माँ की मदद से अपने पिता की गर्दन में तेज चाकू से वार कर उनकी हत्या कर दी।सूचना मिलने पर, बोरखेड़ी पुलिस निरीक्षक माधवराव गरुड़, एपीआई राहुल जंजाल और सहयोगियों? बोरखेड़ी पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। घटना से इलाके में हड़कंप मच गया है। बोरखेड़ी पुलिस आगे की जांच कर रही है।

# एलसीबी के दो वरली अड्डों पर छापे

**बुलडाणा।** शहर रहित जिलेभर मे वर्ली मटका और साथ ही प्रतिबंधित गुटखा बड़ी मात्रा में बेचा जा रहा है। स्थानीय अपराध शाखा की एक टीम ने बुलदाना शहर में दो स्थानों पर छापा मारा और वर्ली मटका से 2,000 रुपये और अन्य सामान जब्त किए।बुलडाणा शहर के इंदिरानगर से आरोपी, साई। महेर अली गैरॅज लाइन में वर्ली

के आंकड़े लेते हुए, एलसीबी टीम ने छापा मारा और दोपहर में उसे गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से 1,275 रुपये जब्त किए गए। एलसीबी के एएसआई प्रकाश राठौर द्वारा दर्ज शिकायत के बाद शहर के पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। साथ ही साथ जूनागांव में गजानन किराना के सामने जूनागंज निवासी आरोपी किशोर गणेश भाग्यवंत को भी वर्ली के आंकड़े लेते हुए पकड़ा गया और उसके पास से 815 रुपये जब्त किए गए। एलसीबी के सिपाही युवराज शिंदे द्वारा शहर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराने के बाद मुंबई जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। बुलडाणा जिले और शहर में जुआ, अवैध शराब और प्रतिबंधित गुटखा और अन्य अवैध व्यापार बड़े पैमाने पर चल रहे हैं।

## मधुबनी हलचल

# भारत बंद के समर्थन में सड़क पर उतरेगा बेदारी कारवां, किसानों की मांगो पर अविलंब वार्ता करे सरकार: नजरे आलम

**संवाददाता/मो सालिम आजाद**

**मधुबनी।** अखिल भारतीय किसान संघर्ष समिति के आवाहन पर किसान विरोधी तीन काले कानून के खिलाफ आयोजित भारत बंद को ऑल इंडिया मुस्लिम बेदारी कारवां सक्रिय समर्थन देते हुए कल अपने कार्यकर्ताओं को सड़क पर उतरने की घोषणा की है। उक्त बातें एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए ऑल इंडिया मुस्लिम बेदारी कारवां के अध्यक्ष नजरे आलम ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि आज किसान इतने ठंड में दिल्ली की सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन सरकार चैन की नींद सोई हुई है। कई किसान की मौत भी हो गई है। किसान आंदोलन के समर्थन में आज पूरे देश में सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन जारी है और कल किसान नेताओं ने कहा कि कल पूरा भारत बंद किया जायेगा। जिसके समर्थन में ऑल इंडिया मुस्लिम बेदारी कारवां अपने कार्यकर्ताओं के साथ कल सड़क पर उतरेगा और केंद्र सरकार से किसान विरोधी तीनों काले कानून को वापस लेने की मांग करेगा।

## राजस्थान हलचल

# शादी से पहले दुल्हन कोरोना पॉजिटिव, कोविड केयर सेंटर में पीपीई किट पहन कर लिए सात फेरे

**संवाददाता/सैय्यद अल्ताफ हुसैन**

**राजस्थान, बारां।** के बारां के केलवाड़ा में एक अनोखी शादी देखने को मिली, जहां कोरोना पॉजिटिव दुल्हन ने पीपीई किट पहनकर अपने दूल्हे के संग 7 फेरे लेकर जीवन की नई पारी शुरू की है। दरअसल, केलवाड़ा के छतरगंज गांव की रहने वाली लड़की और उसकी मां ने 2 दिन पूर्व तबीयत खराब होने पर गांव में आए कोरोना जांच दल को सैम्पल दिया था, फिर पूरा परिवार सामान्य रूप से शादी की तैयारियों में जुट गया। जबकि फेरों के कुछ घंटे पहले दुल्हन और उसकी मां की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव मिली। इसके बाद केलवाड़ा के कोविड सेंटर में ही मंडप सजाया गया और शादी की रस्में पूरी कराई गईं। यह विवाह प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में कराया गया। दुल्हा-दुल्हन, उनके माता-पिता, पंडित ने पीपीई किट पहनकर मंडप में रस्में पूरी कराईं। विधिवत मंत्रोच्चार के बीच दूल्हा-दुल्हन ने पीपीई किट पहनकर की एक दूसरे के गले में माला पहना सात फेरे लिए। दरअसल छतरगंज निवासी लड़की की शादी दांता निवासी सरकारी अध्यापक से तय हुई थी। रविवार को लड़की वाले केलवाड़ा धर्मशाला के लिए रवाना हुए। समारोह की सभी तैयारियां धर्मशाला में की हुई थीं, लेकिन इसी दौरान 2 दिन पूर्व गांव में ही कोरोना महामारी की जांच के लिए दिए गए सैंपल की रिपोर्ट आई, जिसमें दुल्हन व उसकी मां कोरोना पॉजिटिव पाई गई। यह सुनते ही परिवार असमंजस में आ गया। हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार एक बार तेल चढने के बाद शादी होना तय होता है। ऐसे में प्रशासनिक अधिकारियों ने दूल्हा दुल्हन के परिजनों की मांग पर कलेक्टर से दिशा निर्देशन लेते हुए एसडीएम की अगुवाई में एक कमेटी का गठन किया और कोरोना प्रोटोकॉल के तहत कोविड केयर सेंटर परिसर में ही मंडप तैयार किया और यहां प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में दूल्हा-दुल्हन पंडित व लड़की के माता-पिता को पीपीई किट पहनाकर पूरे विधि-विधान से फेरे करवाए गए। संभवत देश में यह पहली शादी है जो कि कोविड केयर सेंटर परिसर में दूल्हा दुल्हन को पीपीई कीट पहनाकर संपन्न कराई गई है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

# चिलचिलाती गर्मी में स्किन जलन से राहत दिलाएंगी 5 चीजें

गर्मियों की मार सबसे ज्यादा त्वचा को झेलनी पड़ती है। गर्मी की तेज धूप के कारण स्किन में हल्की जलन, खुजली, लाल चकत्ते और रैशेज जैसी प्रॉब्लम हो जाती है। इनसे छुटकारा पाने के लिए आप क्रीमें या मॉइश्चराइजर का इस्तेमाल करते हैं लेकिन इससे आपको स्किन जलन से कुछ देर तक ही आराम मिलता है। मगर आज हम आपको कुछ ऐसे नैचुरल तरीकें बताएंगे, जोकि आपको स्किन जलन से लेकर रैशेज तक की परेशानी से हमेशा के लिए राहत दिलाएंगे। तो चलिए जानते है गर्मियों में स्किन जलन और खुजली जैसी प्रॉब्लम को दूर करने के नैचुरल तरीकें।

**1. एलोवेरा जेल**

एंटीबैक्टीरियल एलोवेरा जेल से आप स्किन जलन के साथ-साथ त्वचा की कई ओर प्रॉब्लम को दूर कर सकते हैं। सुबह चेहरा धोने से पहले और रात को सोने से पहले एलोवेरा जेल से 2 मिनट तक मसाज करें।

**2. गुलाबजल**

गुलाबजल का इस्तेमाल त्वचा को हाईड्रेटड करता है, जिससे आपको जलन और खुजली जैसी परेशानी से राहत मिलती है। इसलिए गुलाबजल की एक बॉटल हमेशा अपने पर्स में रखें और जरूरत महसूस होने पर इससे चेहरा साफ करें।

**3. खीरा**

खीरे में मौजूद सूदिंग और कूलिंग प्रोपर्टीज गर्मियों में स्किन के लिए फायदेमंद होती है। स्किन जलन को दूर करने के लिए खीरे की स्लाइस या इसके जूस को चेहरे पर लगाएं। इसे लगाने से पहले खीरे के टुकड़े को थोड़ी देर के लिए फ्रिज में रख दें और ठंडा होने पर इस्तेमाल करें।

**4. दही**

कैल्शियम और मैग्नीशियम से भरपूर दही को ठंडा करके चेहरे पर लगाएं। इससे आपकी टैनिंग की समस्या भी दूर हो जाएगी और आपको स्किन जलन से राहत भी मिलेगी।

**5. तरबूज**

गर्मियों में तरबूज खाना तो हर किसी को पसंद होता है लेकिन क्या आप जानते है कि इससे स्किन जलन और खुजली की समस्या भी दूर होती है। सुबह तरबूज के एक टुकड़ें को चेहरे पर अच्छी तरह रगड़ें और 10 मिनट बाद चेहरे को धो लें। इससे आपको पूरा दिन फ्रेश और ग्लोइंग लुक मिलेगा।

# हेयर कलर से नहीं, नैचुरल तरीके से बालों को करें काला

पहले 30 की उम्र पार करने के बाद लोगों के बाल सफेद होते थे लेकिन आजकल छोटे से लेकर बड़ों तक लगभग सभी लोग इस समस्या से परेशान है। बालों को काला करने के लिए लोग कई तरह के डाई का इस्तेमाल करते हैं। इनमें मौजूद केमिकल्स से बालों को नुकसान पहुंचता है। आप कुछ नैचुरल तरीके से भी इस समस्या से छुटकारा पा सकते है। चलिए आज हम आपको बालों को नैचुरली काला करने के तरीके अपनाते हैं।

**➤ आलू के छिलके**

आलू के छिलके में अधिक मात्रा में स्टॉर्च पाया जाता है। इसका इस्तेमाल करने से जल्द ही सफेद बाल काले होते है। पानी में छिलकों को 10 मिनट के लिए उबाल लें। फिर ठंडा करके बालों में लगाएं।

**➤ देसी घी**

देसी घी का इस्तेमाल करने से बाल हैल्दी रहते है। देसी घी से बालों की मसाज करें। हफ्ते में 2 बार ऐसा करने से जल्द सफेद बालों से छुटकारा मिलेगा।

**➤ कॉफी**

सफेद बालों की समस्या से छुटकारा पाने के लिए कॉफी भी फायदेमंद है। पानी में 2-3 टेबलस्पून कॉफी की डालकर उबालें। गाढ़ा होने पर इसे आंच से हटा दें। ठंडा करके इसे बालों में लगाएं। 45 मिनट बाद बालों को धो लें।

**➤ आंवला**

आंवले में विटामिन-सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है जोकि बालों के लिए बहुत फायदेमंद है। नारियल तेल में आंवला पाउडर मिलाकर गर्म करें। बाद में इसे ठंडा करके 30-40 मिनट तक बालों में लगाएं। बाद में बालों को धो लें। इससे आपके बाल भी काले और लंबे होंगे।

# गर्मियों में रोज खाएं खरबूजा, मिलेंगे ये बड़े फायदे

गर्मियों में तरबूज, खरबूजा , बेल आदि मौसमी फलों की अधिक डिमांड होती हैं। अगर बात खरबूजे की हो तो यह गर्मी में शरीर को ठंडक पहुंचाने के साथ-साथ कई स्वास्थ्य प्रॉब्लम को दूर रखने में भी मदद करता है। खरबूजे में पानी की अधिक मात्रा पाई जाती है, जिसे खाकर शरीर में पानी की कमी को पूरा किया जा सकता है। खरबूजे को एंटी-ऑक्सीडेंट, विटामिन ह्यसी' का भी अच्छा स्त्रोत माना जाता है।

इसके अलावा इसमें अन्य कई पोषक तत्व हैं, जो शरीर को फिट रखने में मदद करते है। आज हम आपको इसे खाने के फायदों के बारे में बताएंगे, जिनके जानकर आप रोजाना खरबूजे का सेवन कर देंगे।

खरबूजे में फैट की मात्रा काफी कम होती है, जिसे खाने से वजन बढ़ने की कोई टेंशन ही नहीं रहती।

खरबूजे में कई एंटीऑक्सिडेंट्स मौजूद होते हैं, जो शरीर को गंभीर बीमारियों से बचाएं रखते हैं।

# मैग्नीशियम भी है शरीर के लिए बहुत जरूरी, कमी पर दिखते हैं ये संकेत

सेहतमंद रहने और शरीर को कारगर तरीके से चलाने के लिए संतुलित डाइट का होना बहुत जरूरी है। प्रोटीन, विटामिन, आयरन के साथ-साथ मैग्नीशियम भी शरीर को सचारू रूप से चलाने के लिए महत्वपूर्ण होता है लेकिन लोग इसकी कमी होने पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। हालांकि ज्यादातर लोगों की इसकी कमी का पता नहीं चल पाता। आज हम आपको कुछ ऐसे संकेत बताएंगे, जिसे पहचान कर आप मैग्नीशियम की कमी को पूरा कर सकते हैं। आइए जानते है कि शरीर के लिए मैग्नीशियम क्यों जरूरी है? और इसकी कमी के संकेत।

**क्यों जरूरी है शरीर के लिए मैग्नीशियम?**

मैग्नीशियम एक ऐसा तत्व है, जिसकी शरीर में पर्याप्त मात्रा में होना बहुत जरूरी होता है। शरीर में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा मैग्नीशियम हड्डियों में पाया जाता है। इसकी कमी होने पर हड्डियां कमजोर हो जाती हैं और इससे आप आस्टियोपोरोसिस नामक बीमारी का शिकार हो सकते

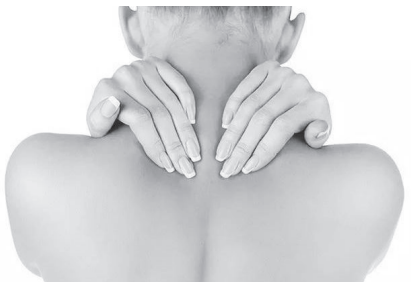

हैं। इसके अलावा मैग्नीशियम की कमी से शारीरिक, मानसिक, याद्दाश्त का कम होना, नाखूनों पर सफेद धब्बे पढ़ना, कमजोरी, थकान और तनाव जैसी समस्याएं हो जाती है। इसके अलावा शरीर में मैग्नीशियम की कमी डायबिटीज, हाइपरटेंशन और दिल की बीमारियों का खतरा भी बढ़ा सकती है।

**मैग्नीशियम की कमी के संकेत**

**1. मांसपेशियों में खिंचाव**

मैग्नीशियम की कमी होने पर धमनियों और मासपेशियों के ऊतकों में कठोरता आ जाती है, जिसके कारण मांसपेशियों में खिंचाव पड़ने लगता है। इसके अलावा प्रैग्नेंसी में पैर दर्द होना भी मैग्नीशियम की कमी का संकेत होता है।

**2. हार्मोनल समस्या**

शरीर में मैग्नीशियम की कमी होने पर हार्मोन लेवल पर प्रभाव पड़ता है, जिससे आपको कई प्रॉब्लम हो सकती हैं। इसके अलावा इसकी कमी के कारण महिलाओं को पीरियड्स के दौरान पैरों में दर्द की शिकायत रहती है।

**3. अनिद्रा की समस्या**

इसकी कमी होने पर इसका सबसे ज्यादा प्रभाव नींद पर पड़ता है। मैग्नीशियम शरीर को आराम पहुंचाकर अच्छी नींद लाने में मदद करता है। इसकी कमी होने पर आपको नींद नहीं आती और सोते समय बैचेनी महसूस होने लगती है।

**4. हड्डियां कमजोर होना**

सेहत के साथ हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए भी शरीर में मैगिनीशियम की मात्रा होनी बहुत जरूरी है। भोजन में मैग्नीशियम की सही मात्रा न लेने पर हड्डियां कमजोर हो जाती हैं।

**5. एनर्जी कम होना**

मैग्नीशियम कोशिकाओं में एटीपी ऊर्जा का उत्पादन करता है, जिससे आप सक्रिय रहते हैं। ऐसे में मैग्नीशियम की कमी होने पर आपको थकावट और ऊर्जा की कमी जैसी प्रॉब्लम होने लगती हैं।

**6. सिरदर्द**

अगर आपको लगातार सिरदर्द की शिकायत रहती है तो यह मैग्नीशियम की कमी का संकेत होता है। मैग्नीशियम की पर्याप्त मात्रा न लेने से सिरदर्द और तनाव की शिकायत हो जाती है।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

# सलमान खान और टाइगर श्रॉफ एक ही फिल्म में...

**सलमान खान** भी फिल्म निर्माता-निर्देशक साजिद नाडियाडवाला के लिए उतने ही खास हैं जितने की टाइगर श्रॉफ। सलमान के साथ साजिद वर्षों से फिल्म बना रहे हैं और दोनों ने मिल कर कई मनोरंजक और सफल फिल्में दी हैं। टाइगर को तो साजिद ने ही लांच किया था। हीरोपंती से लेकर बागी सीरिज तक हिट फिल्मों के साथ उनकी जोड़ी हिट रही है। साजिद के अपने हीरो से काफी दोस्ताना संबंध रहे हैं। सलमान और टाइगर इसीलिए आंख मूंद कर साजिद पर विश्वास करते हैं। साजिद इस समय सलमान को लेकर किक 2 तथा टाइगर को लेकर हीरोपंती 2 और बागी 4 प्लान कर रहे हैं। फिल्म की स्क्रिप्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है और स्थिति सामान्य होते ही शूटिंग शुरू की जाएगी। खबर है कि एक ऐसी फिल्म की प्लानिंग भी बन रही है जिसमें सलमान और टाइगर साथ नजर आए। यदि ऐसा होता है तो दोनों स्टार्स के फैंस के बीच खलबली मच जाएगी। खबरचियों का कहना है कि दोनों को लेकर एक्शन फिल्म बनाई जाएगी। सलमान को भी एक्शन रोल में पसंद किया जाता है और टाइगर तो मानो एक्शन के लिए ही बने हो। इन दिनों एक फिल्म का किरदार दूसरे में भी नजर आता है। जैसे सिंघम फिल्म सिम्बा में दिखाई दिया था। हो सकता है कि किक और बागी को लेकर भी कुछ ऐसा घालमेल हो।

# बोलीं तापसी पन्नू- सब एक जैसे नहीं हैं

**पंजाबी** सुपरस्टार गिप्पी ग्रेवाल ने किसान आंदोलन को बॉलिवुड सिलेब्स के सपोर्ट नहीं मिलने पर निराशा जताई है। हालांकि तापसी पन्नू ने गिप्पी के इस ट्वीट पर रिऐक्टर कर कहा है कि उन्हें सभी लोगों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए। विवादित कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन कर रहे किसानों के सपोर्ट में बॉलिवुड के साथ-साथ पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री के सिलेब्रिटीज भी खुलकर सामने आ गए हैं। दिलजीत दोसांझ के बाद पंजाबी फिल्मों के सुपरस्टार सिंगर और ऐक्टर गिप्पी ग्रेवाल ने ट्वीट कर इस बात पर नाखुशी जताई है कि बॉलिवुड सिलेब्रिटीज इस आंदोलन में किसानों का सपोर्ट नहीं कर रहे हैं। हालांकि गिप्पी ग्रेवाल के इस ट्वीट पर तापसी पन्नू का रिऐक्शन सामने आया है। गिप्पी ग्रेवाल ने अपने ट्विटर पर लिखा, डियर बॉलिवुड, अक्सर आपकी फिल्में पंजाब में शूट होती हैं और आपका खुले दिल से स्वागत किया जाता है। लेकिन आज जब पंजाब को आपकी सबसे ज्यादा जरूरत हैं, आप न तो सपोर्ट कर रहे और न एक शब्द बोल रहे। निराश हूं। गिप्पी के इस ट्वीट पर तापसी ने रिऐक्टर करते हुए लिखा, सर, केवल जिन लोगों से आप बोलने की उम्मीद कर रहे हैं वे नहीं बोल रहे हैं तो हम सबको एक ही छतरी के नीचे मत रखिए। हम कुछ लोगों को किसी की मान्यता की जरूरत नहीं है बल्कि यह हमारे प्रयासों को पीछे ले जाते और उपेक्षित करते हैं।

# किसान आंदोलन के सपोर्ट में आए सोनम और आनंद

**पिछले** कई दिनों से विवादित कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों का आंदोलन सुर्खियों में बना हुआ है। किसानों के इस आंदोलन को कई बॉलिवुड सिलेब्रिटीज ने अपना सपोर्ट दिया है। अभी तक प्रियंका चोपड़ा, दिलजीत दोसांझ, तापसी पन्नू, विशाल डडलानी, स्वरा भास्कर, सोनू सूद, वीर दास जैसे कई कलाकारों ने इस आंदोलन का सपोर्ट किया है। अब सोनम कपूर भी खुलकर किसानों के सपोर्ट में आ गई हैं। सोनम कपूर ने सोशल मीडिया पर किसानों के आंदोलन की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। सोनम ने इन तस्वीरों को शेयर करते हुए लिखा, जब तक जुताई शुरू नहीं होती दूसरे काम नहीं चल पाते हैं। इसलिए किसान हमारी सभ्यता के संस्थापक हैं। सोनम की लिखी यह लाइन मशहूर अमेरिकन लॉयर और थिंकर डैनिएल वेबस्टर ने लिखी थी। सोनम के पति आनंद अहूजा ने भी किसानों के सपोर्ट में पोस्ट करते हुए लिखा, किसान बिना किसी बिचौलिये के सीधे मार्केट में अपनी फसल बेच सके ऐसा फ्री मार्केट का आइडिया समझ में आता है... लेकिन व्यवस्था में सुधार लाने के साथ हमें किसानों की समस्याओं के बारे में भी सुनना चाहिए। क्या कोई ऐसी व्यवस्था है जो न्यूनतम समर्थन मूल्य सुरक्षित कर सके।